किसानों की आय दुगुना करने की एक नई तकनीक : जवाहर मॉडल

कृषि कुंभ (जुन, 2022), खण्ड 02 भाग 01, पृष्ठ संख्या 08–09

किसानों की आय दुगुना करने की एक नई तकनीक : जवाहर मॉडल

पूनम[1], डॉ. एस. एस. लखावत[2] व डॉ. सुमिता कुमावत[3]

[1]रिसर्च स्कॉलर, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

[2]आचार्य, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

[3]सहायक आचार्य, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

E.mail : pk959753@gmail.com

सरकार का लक्ष्य 2022 तक कृषि आय को दोगुना करना है। वहीं इस मॉडल के माध्यम से छोटे और सीमांत किसानों की आय को दोगुना करने के उद्देश्य से जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर ने एक मिश्रित फसल तकनीक विकसित की है, जिसे जवाहर मॉडल नाम दिया गया है। इसमें एक ही समय में दो फसलें ली जा रही हैं तथा इससे किसानों की आय को दोगुना किया जा सकता है। इस मॉडल में बाजार की मांग के हिसाब से किसान दो फसलों की खेती एक साथ कर सकते हैं। प्रदेश में 65 प्रतिशत छोटे और सीमांत किसान हैं। ये किसान जवाहर मॉडल के जरिये अद्भुत काम कर सकते हैं। इस मॉडल में किसानों को बताया गया है कि गहरी जडों वाली अरहर की फसल के साथ उथली जड़ों वाली फसलें हल्दी, अदरक, प्याज, टमाटर, लहसुन और मिर्च की कटाई कैसे की जाती है। इन फसलों की किसानों को अच्छी कीमत मिलती है। मॉडल के माध्यम से खराब मिट्टी और सिंचाई सुविधाओं की कमी जैसी समस्याओं के चलते फसल उत्पादन में किसानों के सामने आने वाली बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया गया है। कम या अधिक बारिश के कारण फसल के कम उत्पादन की समस्या से उबरने के तरीके भी बताये गये हैं।

जबलपुर में स्वयं सहायता समूह से जुड़ी 600 से अधिक महिला किसानों ने जवाहर मॉडल को अपनाया है। ज्यादातर महिलाएं ऐसी हैं जो अपने घरों के बगल बाड़ी में कुछ न कुछ फसलें उगाती रहती हैं। इस बार इन्होंने ने बैग में पौधे लगाए हैं, इसमें जब अरहर जब छोटी थी तो उसमें धनिया लगा दी थी, जिससे उन्हें धनिया भी मिल गया था। कई महिलाओं ने तो सब्जियों की फसलों के साथ ही हल्दी और अदरक की भी फसलें लगाई जो अरहर तैयार होने से पहले तैयार हो जाती है, इससे उन्हें दूसरी नकदी फसलें भी मिल जाती हैं।

बोरियों में लगाते हैं फसलें

इस मॉडल के अनुसार इसमें हम बोरियों में मिट्टी और गोबर की खाद मिलाकर फसल लगाते हैं। जैसे "कि किसान एक एकड़ में अरहर की फसल जमीन में लगाता है तो 15–20 किलो बीज तो लग ही जाता है लेकिन इसमें बहुत कम बीज लगते हैं। इसमें हर एक बोरी में एक पौधा लगाया जाता है। हर बोरी को एक उचित दूरी पर रखा जाता है जिससे पौधे को बढ़ने की पर्याप्त जगह मिल जाती है।'' एक एकड़ में लगभग 1200 बोरियां रख सकते हैं, यही नहीं अरहर के साथ दूसरी फसलें भी ले सकते हैं। जैसे कि बोरी में धनिया भी लगा सकते हैं। एक बोरी में लगभग 500 ग्राम तक धनिया की हरी पत्तियां मिल जाती हैं। यही नहीं बोरी में हल्दी भी लगा सकते हैं। हल्दी जैसी फसलें छाव में भी तैयार हो जाती है और एक बोरी में लगभग 50 ग्राम हल्दी का बीज लगता है और छह महीने में 2–2.5 किलों तक हल्दी और अरहर के एक पौधे से 2–2.5 किलों तक अरहर भी मिल जाती है।

किसान चाहे तो अरहर के पौधे पर लाख के कीट पालकर अतिरिक्त आमदनी भी कमा सकते हैं। 8 महीने में एक पौधे से 350 ग्राम के लगभग लाख प्राप्त होता है। साथ ही अरहर से जलाऊ लकड़ी भी मिल जाती है।

सीधे बीज या फिर लगा सकते हैं पौधे

किसान बोरियों में सीधे बीज या फिर पहले नर्सरी में पौधे तैयार करके बोरियों में उन्हें

लगा सकते हैं। इससे अच्छे तरीके से पौधों को बढ़ने का मौका मिलता है।

पूरी तरह से जैविक तरीके से होती है खेती

बोरी में मिट्टी और गोबर के साथ बायो फर्टीलाइजर शुरूआत में ही मिला देते हैं। बाद में किसी और खाद की जरूरत नहीं पड़ती है। पौधे को जो भी पोषक तत्व चाहिए वो मिलते रहते हैं। अगर हम जमीन में खाद डालते हैं तो मिट्टी के अंदर चला जाता है, लेकिन बोरियों में डालने पर उसी में रहता है और अगली फसल के लिए बढ़िया मिट्टी भी तैयार हो जाती है।

कम पानी में होती है खेती

किसान जमीन में कोई फसल लगाता है तो उसे पूरे खेत की सिंचाई करनी होती है, जबकि पानी सिर्फ पौधे को चाहिए होता है। इस मॉडल में किसान चाहे तो ड्रिप से या फिर हफ्ते में एक दिन बाल्टी या फिर पाइप से पानी डाल सकते है।

जवाहर मॉडल में लगा सकते हैं कई तरह की फसलें किसान अरहर ही नहीं दूसरी कई तरह की फसलें इस मॉडल में लगा सकते हैं। किसान इसमें पालक, मूली, धनिया, बैंगन, टमाटर, लौकी, मिर्च जैसी फसलें लगा सकते हैं।

डेढ़ से दो साल तक चलती है बोरी

वैज्ञानिकों के अनुसार एक बार बोरी में फसल लगाने के बाद बोरी करीब डेढ़ से दो साल तक चलती है। अगर बोरी फट भी जाए तो मिट्टी दूसरी बोरी में डालकर फिर से दूसरी फसल लगा सकते हैं।

जवाहर मॉडल की विशेषताएँ

- इस मॉडल में अधिक पानी की जरूरत नहीं होती है और इसमें किसी भी तरह की जुताई के लिए खर्चा भी नहीं होता है।
- इस मॉडल में 29 तरह की फसलें और सब्जियां लगती है और किसान जो भी उगाएंगे उसी पर उनकी आय भी निर्भर करती है।
- अगर बोरी में अरहर की बुवाई करते हैं तो इसके साथ धनिया, अदरक या हल्दी जैसे फसलें लगाकर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।
- इसके अलावा अरहर के साथ लाख की खेती कर महीने में लाखों का मुनाफा कमा सकते है। लाख की डिमांड मार्केट में बहुत ही ज्यादा है क्यूंकि इससे ब्यूटी प्रोडक्ट्स से लेकर पॉलिशिंग तक का सामान तैयार किया जाता है।
- इसमें खाद की भी ज्यादा जरूरत नहीं पड़ती है। इसमें शुरुआत में ही यदि गोबर या बायो फर्टिलाइजर डाल देते हैं तो उससे अच्छी पैदावार हो सकती है।